यूथ प्लस

शौक बना पहचान

यूथ रिपोर्टर | औरंगाबाद

करियर के साथ-साथ हॉबी को संभाले रखना हर किसी के बस की बात नही होती। करियर की दौड़ में शौक को एक ओर रखना पड़ता है, लेकिन कई लोग अपने इस शौक को करियर के साथ आसानी से संभाल लेते है। ऐसे ही नाशिक जिले के त्र्यंबकेश्वर स्थित 22 वर्षीय कम्प्यूटर इंजीनियर सिद्धार्थ रवींद्र धारणे आज एक जानेमाने चित्रकार है। पढ़ाई के साथ सिद्धार्थ ने अपने करियर के साथ-साथ शौक को नई पहचान दी।
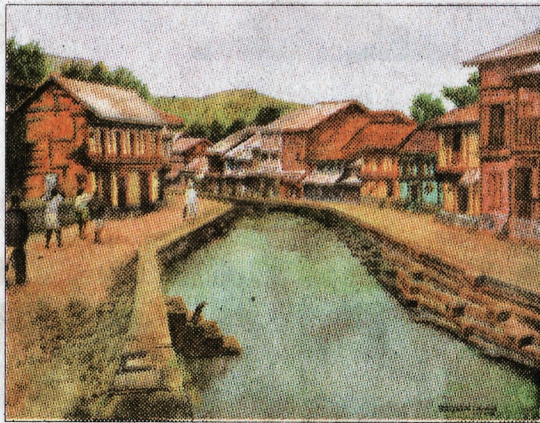
सफर की शुरूआत

पेंटिंग का शौक मुझे बचपन से था। बचपन में कार्टून्स बनाया करता था, लेकिन इस सफर की असली शुरूआत सन 2004 से हुई। अखिल भारतीय जल साहित्य सम्मेलन द्वारा आयोजित पेंटिंग प्रतियोगिता में मैंने निकाले हुए चित्र को राष्ट्रीय स्तर पर पहला स्थान मिला। उस दिन एक अनोखा आत्मविश्वास जाग उठा।

चित्रप्रदर्शन एक अच्छा जरिया

कलाकारों के लिए चित्र प्रदर्शन एक अच्छा जरिया है। इसके माध्यम से कलाकार तथा कला दोनों को ही लोगों के सामने आने का मौका मिलता है। नाशिक शहर, त्र्यंबकेश्वर तथा पुणे में अभी तक कुल मिलाकर 6 प्रदर्शनी आयोजित की गई हैं। जब लोग मेरे चित्रों की सराहना करते हैं, मेरे चित्रों तथा मेरे साथ तस्वीर खिचवाते हैं, तब बड़ा अच्छा लगता है।

मिलती है पॉकेटमनी

सन 2012 में अपने घर में सिड आर्ट स्टुडियो नाम का छोटासा आर्ट स्टुडियो शुरू किया। जिसके द्वारा कई छोटे बड़े आर्ट इवेन्ट का आयोजन किया। नाशिक के मशहूर आर्ट गैलेरी में लगाया गया है। इन प्रदर्शनियों से चित्रों को पसंद कर खरीदा जाता है। इसी कला के दम पर मैं पार्ट टाइम जॉब भी कर रहा हूं। जॉब के साथ-साथ पॉकेट मनी का इंतजाम भी हो जाता है।

कुछ यादगार पल

सन 2008 में जिलाधिकारी कार्यालय और आपत्ति व्यवस्थान विभाग के ओर से महाराष्ट्र दिवस के अवसर पर ली गई जिला स्तरीय स्पर्धा में हिस्सा लिया था। स्पर्धा के बाद आयोजन कर्ताओं ने शाम को एक चित्र प्रदर्शन रखा था, जिसमें इच्छुक किसी भी विषय पर चित्र बना सकता था।

मैंने दस मिनट के अंदर सनसेट की पेंटिंग बनाई, जो अधिकारियों तथा आयोजन कर्ताओं को बेहद पसंद आई। एक छोटे से बच्चे ने बनाई हुई इस पेंटिंग को देख बे बेहद खुश हुए ओर मुझे 3 हजार रूपए नकद इनाम दिया। इसके बाद स्पर्धा के रिजल्ट में मेरा प्रथम घोषित हुआ। यह दिन मेरे लिए सबसे यादगार पल था।

पसंदीदा चित्र

1950 साल का मेनरोड गोदावरी का चित्र अभी तक के सबसे पसंदीदा चित्रों में से एक है। 1950 के समय का यह चित्र है, जिसमें पुराना गोदावरी तट का दर्शन है। यह चित्र जाने माने आर्किटेक ने खरीद लिया है, लेकिन यह मेरे दिल काफी करीब रहा है। इस कला के कारण पंडित जसराज, रामनंद सागर, राज ठाकरे, गौरवसिंह शेखावत, विलासराव देशमुख, सुरेश रैना जैसे बड़ी हस्तियों से मिलने का मौका मिला।

पुरस्कार

सन 2004 में मैंने पहली बार प्रतियोगिता में हिस्सा लिया था, जिसके बाद यह क्रम आगे चलता ही रहा।

- बालकुमार चित्रकला प्रतियोगिता में महाराष्ट्र तथा गोव राज्य मिलाकर सन 2007 और 2008 दोनों ही वर्ष राज्य स्तरीय पुरस्कार
- हिन्दुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड द्वारा आयोजित स्पर्धा में 2009 तथा 2010 में पुरस्कार
- महाराष्ट्र शासन वन विभाग की ओर से वन्यजीव सप्ताह अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिता में पिछले पांच वर्षो से पुरस्कार
- राष्ट्रीय स्तर पर तीन, राज्य स्तर पर सात तथा जिला स्तर पर 11 पुरस्कार हासिल
- विद्यावाचस्पति पं. शंकर अभ्यंकरजी के हाथों श्री गंगा गोदावरी पुरस्कार से नवाजा गया। यह पुरस्कार प्राप्त करनेवाले सबसे कम उम्र के व्यक्ति है।

The Dainik Bhaskar, main edition, page 6, Thursday, 12 June 2014